ISSN:2583-8849



नेहा 'नेह'
पिण्डवाडा,सिरोही,राजस्थान

1

दीवारों में दर दिखता है,
सारा घर खंडहर दिखता है।

बाहर जब चिल्लाए कोई,
भीतर वाला डर दिखता है।

हिम्मत से उड़ती है चिड़िया,
लेकिन सबको पर दिखता है।

थक जाती हूँ नींदों में जब,
सपनों में फिर घर दिखता है।

उधड़ा जूता कोई न देखे,
पगड़ी पहना सर दिखता है।

ख़ुद पर हँस सकता है वो ही,
जिसको सब इकसर दिखता है।

बातें जिनको समझ न आएं,
उनको बस तेवर दिखता है।

2

दुनियादारी खा जाती है
ये बेदारी खा जाती है

बेपरवाही से बचते हैं
ज़िम्मेदारी खा जाती है

कुछ फूलों को माली की ही
पहरेदारी खा जाती है

बिना भरोसे जैसी भी हो
साझेदारी खा जाती है

हमको साहिब अपनी ही तो,
दावेदारी खा जाती है।

हद से ज़्यादा उम्मीदें भी,
रिश्तेदारी खा जाती है।

इज़्ज़त को भी कभी-कभी तो
परदेदारी का जाती है

हिस्सेदारों को उनकी ही
हिस्सेदारी खा जाती है

3

इधर के हैं,उधर के हैं,
न जाने किस सफ़र के है।

भला बुरा सा कुछ नहीं,
ये भेद सब नज़र के हैं।

सवाल और हैं भी क्या,
अगर के हैं,मगर के हैं।

सभी ज़वाब हाँ के थे,
कुछ एक ना नुकर के हैं।

इनाम कह रहे हैं ये,
क्या दाम हम हुनर के हैं।

ये रासते भी चल रहे,
कि राहगीर घर के हैं।

हैं मंजिलों की चाह में,
सभी उसी डगर के हैं।